International Journal of Applied Research 2024; 10(4): 300-301

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(4): 300-301
www.allresearchjournal.com
Received: 02-02-2024
Accepted: 07-03-2024

डॉ. शिखा
असिसटेंट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी महाविद्यालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार भारत

Corresponding Author:
डॉ. शिखा
असिसटेंट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी महाविद्यालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार भारत

समकालीन युग में ''रूद्र'' की कविताओं का महत्व

डॉ. शिखा

प्रस्तावना

महान लेखक की विशेषता होती है कि वह हर युग में समकालीन बना रहता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवदी के प्रसंग में डॉ. नामवर सिंह ने कहा था कि समकालीन वही नहीं होता, जो समकालीन की तरह लगता है, कभी–कभी गैर समकालीन प्रतीत नहीं वाला भी नितान्त गैर समकालीन होता है। ध्यातव्य है कि समकालीनता का संबंध लेखकों के संदर्भ में परा ऐतिहासिता से होता है। महान लेखक परा ऐतिहासिक तो होते है पर वे अपने युग से भी गहरे स्तरों पर जुड़े होते है। रामगोपाल शर्मा ''रूद्र'' साठ वर्षो तक लगातार सृजन कर्म में ऐतिहासिक संवेदनाओं से युक्त रचनायें भी करते रहे। रूद्र जी के लेखन का समय 20वीं सदी के चौथे दशक से आठवें दशक तक है। जाहिर है कि रूद्र जी ने स्वाधीनता आन्दोलन के उत्कर्ष काल में लेखन आरंभ किया। तब भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वधीनता तो मिली पर सम्प्रदायिकता और विभाजन की पीड़ा के साथ। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध की छाया में अपने आरम्भिक दौर की कविताएँ लिखी। इसलिए उनकी कविता मनुष्यता की भीषण संहार से हुई है। इस संदर्भ में 'पृथ्वी की पुकार' कविता उल्लेखनीय है। रूद्र जी के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सबसे महत्वपूर्ण घटना राष्ट्रीय क्षेत्र में बयालीस का आन्दोलन था, जिससे संबंधित उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी।

रामगोपाल शर्मा ''रूद्र'' की कविताएँ अपने समय और समाज से गहरे स्तरों पर जुड़ी हुई तो है ही उससे परे प्रेम, प्रकृति, आत्मसंघर्ष जैसे शाश्वत विषयों पर भी कविताएँ लिखते है। इसलिए इनकी समकालीनता और प्रासंगिकता बनी रहती है। छठे दशक के आरम्भ में रूद्र जी ने एक ऐसी प्रेम कविता लिखी, जो उनकी पूरी कथा कहती है। अन्ततः वह कथा व्यक्ति कवि की न रहकर पाठक की भी हो जाती है। 'पीते ही आये नयन, ना हिम की प्यास गई' जैसे कालजयी प्रेम–गीत रूद्र जी ने रचे। उनकी 'मुझको जरूरत क्या' उल्लेखनीय प्रेम कविता है।

रूद्र जी की कविता में प्रकृति से रागात्मक लगाव परिलक्षित होता है और यह उनकी कविता को समकालीन बनाये रखता है। प्रकृति का सौन्दर्य मनुष्य के सौन्दर्यबोध के विकास से गहराई से जुड़ा है। रूद्र जी ने प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण किया है और अनुषंगिक भी। उनके स्वतंत्र प्रकृति चित्रण आरम्भिक दौर की कविता 'भोले। कुसुम भुले कुसुम !! में देखिये–

लो ! तितलियाँ मचली, चली, संतरंग चीनांशुक पहन,
छवि की पुतलियों–सी मचलती, मद–भरे जिनके नयन,
हर एक कलि के कान में कहती हुई ''जागो बहन !
जागो, बहन ! दिन चढ़ गया, खोलो नयन, धो लो वंदन !!–(1)

प्रकृति का यह चित्र नवीन और आत्मीय हे। इस तरह के चित्र अन्य कवि के कविताओं में देखना दुलर्भ है। 'साँझ हुई, घर आये पक्षी'! शीर्षक कविता में सांध्यकालीन प्रकृति का चित्रण किया गया है। सूर्यास्त का भव्य चित्र अंकित किया गया है। प्रकृति चित्रण के संदर्भ में रूद्र जी की अति प्रसिद्ध कविता ''भेरवी'' उल्लेखनीय है। छन्द्र और वर्णन शैली दोनों दृष्टियों से यह भिन्न तेवर की कविता है। यह बड़ी मोहक कविता है, जिसमें प्रभातकाल के आनंद–तरंगित और प्रफुल्लित वातावरण का चित्रण किया गया है–

तितलियों के रेत नेह से
भोर की हवा में खेल, खिल रही है पत्तियाँ,
ओस के सनेह से
जग रही हैं आरती–सी दूवियों की बत्तियाँ....

पंछियों की रागिनी
चहचहा रही फुदक–फुदक नदी कछार पर,
मछलियाँ सुहागिनी
भाँकती गिन लहर–लहर के पट उधारकर–(2)

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि रूद्र जी की कविता में अपने समय और समाज की समग्र और जटिल अभिव्यक्ति हुई है। ये कविताएँ अपने समय और समाज से जितने गहरे स्तरों पर जुड़ी है, उतनी ही सर्वकालिक भी है। यहीं उनकी कविता की शाश्वतता है, इसलिए उसकी समकालीनता बनी हुई है। रूद्र जी की कविताओं में प्रेम की सधन अनुभूति है। रूद्र जी ने प्रकृति के आत्मीय चित्र उकेरे है, उन्होंने ऋतुआश्रित बेजोड़ प्रेम कविताएँ रची है। आज प्रकृति पर गहरा संकट है। पर्यावरण असंतुलित हो गया है। कभी अनावृष्टि, तो कभी अतिवृष्टि। कभी जानलेवा गर्मी, तो कभी प्राणलेवा सर्दी। अनास्था के इस युग में आस्था का यह स्वर रूद्र जी को समकालीन बनाये हुए है। रूद्र जी की कविता में व्यक्त दुःख, पीड़ा, बेचैनी और घुटन व्यक्ति विशेष की सीमा को लाँघकर निम्नमध्यवर्गीय अभावग्रस्त लोगों तक परिव्याप्त हो जाती है और यह उन्हें समकालीन कवि बनाये हुए है।
रामगोपाल शर्मा ''रूद्र'' ने छन्दोबद्ध, रचनायें की है। नई कविता के दौर से मुक्तछन्द की कविताओं की चर्चा जोर पकड़ रही है। नवगीतकारों का इस पर विशेष बल है। इस प्रसंग में रूद्र जी पाथेय हो सकते है। साथ ही इस प्रसंग में रूद्र जी की समकालीनता भी स्वयम् सिद्ध है।

शोध संदर्भ

1. हर अक्षर है टुकड़ा दिल का– पृष्ठ–41
2. वही पृष्ठ–43
3. लेली, डी. यू. सी. सी. आई. ओ. असेंबली में एक कविः अथर्ववेद में रुद्र की एक विशेषता पर कुछ टिप्पणियाँ। (2023) 21-36.
4. भट्टाचार्जी एस. रुद्र वेदों से महाभारत तक। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के इतिहास। 1960 जनवरी 1;41(1-4):85-128.
5. माचेक वी. देवताओं की उत्पत्ति रुद्र और पु अन। आर्किव ओरिएंटलनि. 1954;22(4):544-562.